SEM-I -हिंदी के विद्धार्थियों का

डॉ.जशाभाइ आपका स्वागत करता है।

सुभद्रा कुमारी

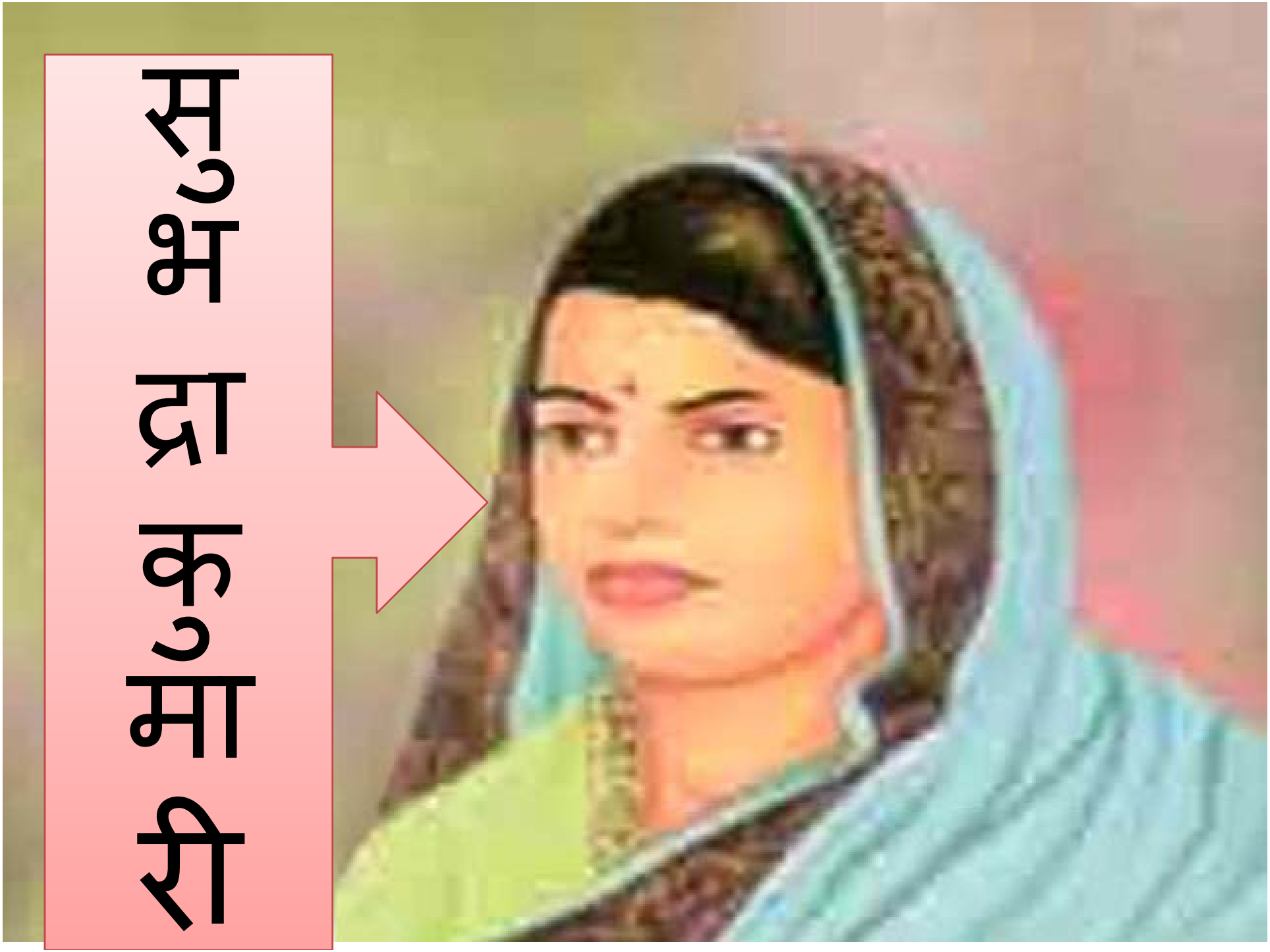

सुभद्राकुमारी-परिचय

*उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में
*बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचना
*राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण हैं।
*उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। १९१९ में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं।

सुभद्राकुमारी-परिचय

*१९२१में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं।
*दो बार जेल भी गई थीं।
*वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं।
*स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है।
*फरवरी १९४८ को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।

वीरों का कैसा हो वसंत/सुभद्राकुमारी

भारत के वीर

आम लोगों के लिए वसंत

वीरों का कैसा हो वसंत / सुभद्राकुमारी चौहान

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार;
सब पूछ रहें हैं दिग-दिगन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग अंग;
है वीर देश में किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

उदधि-समुद्र
प्राची-पूरब
दिग-सब दिशाएँ
दिगन्त-क्षितिज

वीरों का कैसा हो वसंत / सुभद्राकुमारी चौहान

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण;
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत

मारू- युद्ध के समय गाया बजाया जाने वाला एक राग

कृपाण-कटार

दुरंत-बहुत गंभीर

वीरों का कैसा हो वसंत / सुभद्राकुमारी चौहान

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खण्ड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड;
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत

हल्दीघाटी-राजस्थान का वह ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ महाराणा प्रताप और अकबरके बीच असंख्य युद्ध हुए

हल्दीघाटी राजस्थान के उदयपुर ज़िले से 27मील

दुर्ग सिंहगढ-यह प्रसिद्ध क़िला महाराष्ट्र केप्रख्यात दुर्गों में से एक था। यह पूना से लगभग 17 मील दूर

वीरों का कैसा हो वसंत / सुभद्राकुमारी चौहान

भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं;
फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत

वीरों का कैसा हो वसंत / सुभद्राकुमारी चौहान

आभार सह धन्यवाद